

## PRABHAT KHABAR, Patna, 4.9.2017

Page No. 15, Size:(18.32)cms X (26.82)cms.



## आज पढ़िए अंतिम कड़ी

एक तरफ सब्सिडी और गरीबों के कल्याण के सरकारी खर्च पर बेतहाशा वृद्धि हुई पर उसका परिणाम नीचे तक नहीं पहुंच रहा था . कुछ राज्यों में तो जितने घर थे, कहीं उससे अधिक राशन कार्ड थे . इस तरह भारत का भविष्य और विकास, भ्रष्टाचार के अंधेरे ने निगल लिया था . 'आधार' ने उम्मीद पैदा की है कि सही आदमी को पहचानकर उसकी मदद की जाये. सीधे उसके हाथ में उसका हिस्सा देकर, पहंचाकर, ताकि वह अपनी नियति का खुद मालिक बन सके . किसी बिचौलिये या भ्रष्ट अफसर के रहमोकरम या दया पर मयस्सर न रहे.

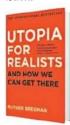


लंदन (यूरोप का जिलीय केंद्र ) के मशहूर स्ववायर माइल चीराहे पर, पिछले चालीस वर्षों से तेरह आवासावडीन (डॉमलेस) लोग रह रहे थे. पिछले आवामावान । हामत्स) लगा रह रहे था एकड़े गांसीन वर्षों से तेरफ़ क्षिटेन की पुरिस, अवहता और एनजीओं के लिए मुसीबत बने हुए थे. इन तेरह लोगों पा ब्रिटेन सरकार के तीनी विभागों (पुलिस) अवहतन और सामाविक सेवा सेंदालों संस्थाएं। का कुल मिलाकर व्यक्ति वर्षों चार लाख पाँच ज ८०० एगा कर्षों पा रा लाख पाँच ज ८०० एगा कर्षों पा रा पा पुणित भी लंदन विका एक संस्था ब्राह्म में एक मीलिक चारियों क्षा कि इन तेरह आवासीवादीन सहक चारियों की भी अञ्चाची पटपस्था को जायेंगी. इनके रोज खाने रहने का बंदोबरल सरकार इंडा होगा। यानों सीचे उसने का बंदोबरल सरकार इंडा होगा। यानों सीचे उसने का बोचे पूर्ण सा इंडा होगा। यानों सीचे उसने का बोचे पूर्ण सा इंडा होगा। यानी सीधे उनके हाथों में पैसा. हरेक पर 3000 यांची सींधे उनके लांधे में पैसा, टेक्स पर 2000 पंद सालाना बढ़ करने के लिए सहस्य व्यवस्था करेगी, ये मींधे करें या अपने स्लालकार के माध्यम से साइक पर स्टिन्सलें उन लोगों को अस्टरी क्यां से साइक पर स्टिन्सलें उन लोगों को अस्टरी क्यां थी, एक टेलिप्सेन, एक शरक्तील, सुनों में मदर करनेवाला एक सावकर के उ. इस तक रोवा की रोटो-मेंटी अनल-अलगा अस्टरी, एक वर्षा बाद राजा मां इस्त्र अपने अस्टिन अस्टरी अस्ति अस्ट राजा मां इस्त्र अपने अस्टिन क्यां अस्ति अस्ट राजा है, जनकि सावसर इन्हें 3000 पींड दे राजि है, इन्हों सिमोन नाम के सावसर इन्हें 3000 पींड दे राजि है, इन्हों सिमोन नाम के सावसर इन्हें 3000 पींड दे राजि है, इन्हों सिमोन नाम के उत्तर संख्या है, और स्ट्रालन भी से टेहून (नवर) के तक्त में दे, इस बदलाव ने सिमोन का जीवन बदल दिवा, सिमोन ने कहा कि ने सिमोन का जीवन बदल दिया। सिमोन ने के का कि फल्ली बार मेरे जीवन में कुछ जब पर एक है. मैंन पूछ अपने पर एक है. मैंन पूछ अपने पर एक है. मैंन पूछ अपने पर एक है. मेंन पूछ अपने पर एक है. मेंन पूछ अपने पर हो जी मेंने के हैंद सहल जब, नेकर में रे पता चाइक पर रोगे चल होती के हैंद्र सहल जब, के कर में राज चाइक पर रोगे चल होती के हैंद्र सहल अपने अपने अपने पता है चुका था. वे अपने अपने पता है चुका था. वे अपने अपने पता है चुका था. वे अपने अपने पता है चुका अपने पता है चुका अपने पता है चुका के प्रतिस्था की पहले कि पता की पता है चुका जी करा है चुका के पता है चुका के पता है चुका है चुक इन प्रयोगों ने इन लोगों को अधिकारसंपन्न बनाया. मौका दिया कि अपने जीवन में हस्तक्षेप कर सकें मको प्रयोग कर रागे, अपने जावन में हरतक्षप कर सक. ने क्षेत्र कर रागे, अपने को बदल सकें, कई दशकों से सरकार या उसकी एजींसवां इन लोगे को सड़क से हट में के लिए टॉडन करने, दवाब डालने, समझाने, अदालती मुकदमा जैसे काम करनी रहीं, पर हालात बैसे ही रहे. इन सब पर लगभग सालाना









## आधार के प्रयोग को रोकना उचित नहीं

कार्यकर्ताओं पर खर्च अलग था. इस नये प्रयोग ने सरकारी खर्च भी घटाया और इनका जीवन भी

न सरकार खप भा प्रदाश अस्त इनका जानने भा बदल दिया. प्राप्ता 'ह इन्हेमनींगरट', ने दिख्या, आवासवियान सड़कों पर हाने वाले लोगों पर खप्ते का सबसे बेहतर प्रमाणिक तरीका, उन्हें को पैसा देना है. स्त्रास्त खार्टिक्ट केंगिरिक स्त्रीम का ऐसा हो। अपने हक का फ्ला अपने हाथ में पाप्ता को उससे सपना एक का फ्ला अपने हाथ में पाप्ता की इससे सपना एक त्या रूप होता, एका की बचन अला होगे, इसके क्यां भे भारत का सीचिवार को तो सर्थी मुंज की इससे हमें हमें हम के स्त्रा की स्त्रा सर्था पहला की अनुसार पेट्रोलिंटस मंत्रालय ने अपने सर्थे में साम की अनुसार पेट्रोलिंटस मंत्रालय ने अपने सर्थे में प्राप्ता की की, ब्रास्टिट हमा की एक पहचान की चर्चा की है. यूनाइटेड नेशन की एक एपाट है 'एनबालग डाजटल आइडाटटा', जिसम

ापाँट हैं एनिवाला । डाजटन आइडीटटी , जानमा तो उज्जो उल्लेख है कि आपा की बदौलना मत्ते में जर्जा सर्विच्छी में एक बिलियन डॉलर की बचन संभव है. जाने-माने आर्थिक उनकार का आर्थिक जानेत्रिक नीतीं कि उनकेशा शंकर अख्यर को आदार पर अभी-अभी पुस्तक अधी है. पुस्तक की भूमिका में पर कमते हैं- बत्ती चन्हे हैं उसते प्रस्त हैं महत्त्व, अर्थाताओं जीन सीनीय गीलक्षेत्र को उद्धा करते हैं कि सभी सम्मल सतिवा सहै-माने दरवाओं को ध्वस्त करने की दास्ता हैं. इसी रूप में युनिक आइडेंटिटी प्रोज़ान्स, आधार) करोड़ों-करोड़ों को खासनीर से वॉन्टतों को यह फडचान या वजूद य खासती, में वांच्यों को तह प्रवास या बजुद जा हिंदबार तेन हैं के वांक्रित कर मेंके कि 'अह-एम एंड ह अह एम' वांनों में हूं और में फी के हैं उच्छों के अध्यर पर वह पताते हैं कि हिंदले कई रच्छा में सहस्तारों ने करतताओं के अध्ये-अदावों रुपये सर्विकारी के रूप में गरियों के विकास के लिए उच्छों किये जहात्वति के रूप में पेहम के रूप में या अन्य सामाजिक कल्याण के कामों में, यह खर्च देश को जीड़ीये का लगभग तीच पीसरी है. एह उच्छों के कहाण इसो में आपेसे अधिक तो प्रशासनाय व्यक्तियों को या जिल्ला इस पर वास्तिक हक या उन तह परिची हो गरी, बीच में विधानिय

था, उन तक पहुंची ही नहीं, बीच में विचौलिये खा गये, वह याद दिलाते हैं कि शायद नयी पीढ़ी को मालूम न हो, वर्ष 1985 की घटना, ओहिशा को सालुध्य न हो, वार्ष 1955 की गटना ऑदिका के सालाहाँ में एक निवासिस मिला पन्तार को दालता. यह अपने गॉरवार को खिलाने में अवस्थ महत्त 40 रुपने में बेचा दिया. पाता को माहित्या में तब घर्सा खबरें एपीन अवस्था में की पुरिक्रांत बन्ती होंगे, देश में मूं के लेका आक्रीका अपने, एकापतिक प्रधानस्थी कार्योत्त गाँची इन गरियों में बहात के, वाह्य की स्थिति स्थानस्थ कर यह अपने अपने एपीयत और अभिजाल परिवास में एने-बहुँ वाजीव गाँवी के लिए यह स्थिति सरका थी. यह केन इन्हें स्थान थे. परिस्थितिविश्व राजनीति में आवे. पूरे राजनेता नहीं हुए थे. दिल्ली लौटकर उन्होंने लगातार कई महत्वपूर्ण बैठकें बुलार्वी. नौकरशाही को कहा कि इसका हल निकालें.

शकर अखर को पुस्तक में दिये गये आकड़े के अनुसार 1986-87 में भारत खाद्य और उर्वरक सम्सिडी पर 37 विलियन रुपये खर्च करता था. तब

यह जीडीपी का 1.7 फीसदी था. और सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में स्वास्थ्य और शिक्षा पर 59 बिलियन रुपये खर्च करता था. पर इन योजनाओं के लिए आर्वेटित वह गणि बहुत कम मात्रा में रिसवर गीचे नाती श्री जारी जरूरतगर्ने तक गहुंच्यो - पहुंचते 100 पैसे में 15 पैसे रह जाती थी, कुछ दिनों के बाद राजीव गांधी राजस्थान गये, वहां भी त्वना के बाद राजाव गांधा जंवस्थान गांद, वंदा भा क्वों स्थिती देखी, भारतीव आवादी वा 40 प्रीस्थी विहस्स गांची झेल रका था, पिन जंबई के कांग्रेस अभिवेशन में उस्पेति अमती इस गींदा को स्वर दिया ऑडिंग्डा और राजस्थान के अनुमती को राषद दिया, कहा, गांची उन्मुपन के कांग्रेस्भी में बीद 100 रस्पें उसर से आविदित विहें ती नी मिंध 15 स्थास ही गहुंच गांते हैं, जीन की ग्रह गाँग उस् रुपये) प्रशासनिक खर्चिवचौलियं, सता के दलल, ठेकेदार और प्रष्टों की जेब में जाती है. उड़ीसा की कानुस जैसी महिलाएं, सबसे गरीब महिला(शायद गांधा का आतम व्यक्ति) तक आत-आत सरकारा 

कि 11 उपनीमा सामधित, जिसे गंगीमों तक वा उनकी सामों कर गहुंचाना था, उसने से एक भी अर्जनीवन अपूर्वी और खात गुणतन के कारण गंगीमों के बीप नार्वे पूर्व एक उसने कारण गंगीमों के बीप नार्वे पूर्व एक उपने भीवा छह महत्वपूर्व अरुयन हुए, जिसमें कर्ल बैंक मेर्र बेजन आरोप के अरुयन में गामिल हैं. इनवा निकार्य था कि सार्वजनिक आर्मुति के बे खाड़ान गंगीमों कर पहुंचारी गर्वे हार्यों बहे, पैमाने पर लेकिज वा अरुयार है. इस बीच 1986 में खाब सम्बिधी की शीव जो 20 बिलियन रुपये हो में, बहुकर 2004 में 270 बिलियन रुपये की गृती, 2004 में योजना आरोप के एक मुख्योंकन पूर्वी उपने में प्राचित्र के एक मुख्योंकन गती. 2004 में योजना आंगति के एक मूल्यांकन में प्राचा चला कि 2003 2004 के बाँच र कराओं को गर्वश्वों नह पहुँचाने के लिए 14.07 मीट्रिक रा खाडान दिये गई, पर महत्त 5.95 मीट्रिक टन खाडान दिये गई, पर महत्त 5.95 मीट्रिक टन खाडान दिये गई, पर महत्त 5.95 मीट्रिक टन खाडान कि वार्च कर प्राचान कि वार्च 5.9 पीता मिल्हा इक्ट खाडान मीच्राह, वार्च गई, कार्च 5.9 पीता मिल्हा इक्ट खाडान मीच्राह, वार्च गई, कार्च 5.9 पीता मिल्हा मीच्राह, वार्च गई, वार्च कर्मीक इन्हों परवार्च में पहली है, कार्ची इन्हों कर कर्मी इन्हों परवार्च में पहली है, कार्च इन्हों कर कर्मा करात अंति-पत्र मीच्राह, वार्च वार्च करात अंति-पत्र मीच्राह, वार्च वार्च करात अंति-पत्र मीच्राह करात अंति करात करात अंति कराति करात करात अंति कराति गरीबों के लिए आबंटित एक रुपये में से महज 16 पैसे ही उन तक पहुंच रहे हैं. यानी व्यवस्था के शीर्ष पर बैठे लोगों को सब पता था, पर या तो वे असहाय थे या बीच की लूट में लगी ताकतों के आगे समर्पित और उनकी सेवा में थे.

और उनकी सेवा में थे,
किस अवार को एस्तक में दर्ज नक्यों के
अनुसार सिर्फ जनविक्सण प्रणालों के खाद्याना
में ही बार लूट नहीं ही होते थे, उज्जी के नाम पर
जो निक्स लूट नहीं ही होते थे, उज्जी के नाम पर
जीजन के लिए दिवा जा रहा था, वहर 2002 में
52 जिंदराज में क्षा था, 2009 में बाद कहन 760 रुप्ये विशिवन हो गया थेएल गैस बाने एस्तियों का ताम उनकी भी लिए रुप्त था, जो पुलिय के तीर्थ आसीरों में से एस हैं, स्वाच्या में रुप्त के वार्थ 2008 में गहुल गांजी ने भी असमे पिता राजीब संवेदराशील च्यास्था में वहर रुप्त स्वामाधिक रुप्त में उदात है पिता च्यास्था में वहर रुप्त स्वामाधिक हम्म से उठता कि पिता प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने भी यही सं उठता कि पाला प्रधानमञ्जा राजाय गांधा ने भी यहां कहा, इसके तार कारोम के नार्योक्ष रूपा, स्थाकेटन सिंह या विपक्ष की मिलीजुली सरकारों की सुत्रधर रही, वक क्यों गार्ड इसे गंधने के लिए कुछ चर पामी? क्या वह उनसहाब या अक्षम भी या भारा में रहते व्यवस्था की गीभी लूट को सवाल उठा कर वह नाकर-खलनक्क दोनों की भूमिका में उना चाहती थी. साथ ही लूट की वह व्यवस्था किसके हित में कायम रखना चाहती थी, या कांग्रेस ही इस

आधार को लेकर कुछ और गंभीर लोगों ने अनेक पासंगिक सवाल उठारो हैं. ये लोग तकनीकी पक्ष के भी गहरे जानकार हैं इनमें से एक कर्नल मैथ्यू थॉमस से हमारी मुलाकात कुछ महीनों पहले हुई उन्होंने ऐसे अनेक तथ्य आधार को लेकर बताये, जो गंभीर सवाल खड़े करते हैं. सरकार और आधार को तकनीकी रूप से श्रेष्ट और सुरक्षा की दृष्टि से अभेद्य माननेवाले लोगों को इन सवालों के जरूर उत्तर देने चाहिए . पर, आधार के प्रयोग को रोकने की बात



को किन्हीं कारणों से अघोषित संरक्षण दे रही

लूट को निन्दी कारणों में आगींना संस्था रे वो से, नविंक 70 वर्षों के अजारी में सबसे अधिक राज उत्तका राज है. वर्षों करण के बाद 1991 से 2010 के बीच भारत का खर्च खाडान उन्तु और उर्देश्य की सब्दियों पर 122 विलिस्त स्था में बद्धका 173 हिएका रुपें को पाज, और इसी पात सामिणक धोजों में यह और उर्जी का मुक्त खर्च मिलान 102 विलिस्त स्था में 150 व्यक्ति मान खर्ची मिलान 102

विलिशन रुपये से 5.24 ट्रिलिशन रुपये हो गया. एक तरफ सब्सिडी और गरीबों के कल्याण क सरकारी खर्च पर बेतकाशा वृद्धि हुई पर उसका परिणाम नीचे तक नहीं पहुंच रहा था. कुछ राज्यों में तो जितने घर थे, कहीं उससे अधिक राशन कार्ड थे. परिणान नांच तक नांग पूर्व कर था तुरू उराजा। ते ति तिने प्रयं व वर्डी उससे अधिक नाम कांड थे. इस तक भारत कर विषय की रिविक्त भारत कर विषय की रिविक्त भारत कर के अपेरी ने निकल लिया था. आजा है? ने उसके दिव की रहत की जाते. सीचे उसके हाल में उसका किस महत्त की जाते. सीचे उसके हाल में उसका किस महत्त की जाते. सीचे उसके हाल में उसका किस महत्त के उसका किस के उसका किस महत्त की जाते. सीचे उसके हाल में उसका किस के उसकी किस के उसकी किस के उसकी किस के उसकी कर के उसके कर के अपेर के उसके के अपेर के अ

नहीं रह जायेगा. नोटबंदी और कालेधन के खिलाफ सरकार

ने जो कानून बनाये या काम किये है. उनका असर साफ दिख रहा है, आयकर देनेवालों की संख्या है 25 फीसदी की बढ़ोतरी पांच आस्त तक हुई है नोटबंदी का अलग असर कश्मीर के पत्थरबाजों और नक्सली गतिविधि पर हुआ है.

और नक्सली मेहितिये पर हुआ है.

अपने प्रकार में महितिये पर हुआ है.

प्राण्डे को सुन्निम कोर्ट के रो जाजे एके

रोकिनो और मनात प्रण्य मे मानि क क्ट्रांणकर्म रे

रोकिनो और मनात प्रण्य मे मानि क क्ट्रांणकर्म रे

राजिम को में में माने के स्वारं में स्वारं के अपने से

रोकिनो हैं के स्वारं में स्वारं के से

के जा कि खर कार्य वनकर राजसता अपनी

में कार्ज कि खर कार्य वनकर राजसता अपनी

से आधार को जोड़ी में कोई पूर्वाक भी नहीं है.

से

साथ को जोड़ी में कोई पूर्वाक भी नहीं है.

से

सरद की प्राविक्त करून बनाव राजसता अपनी

से आधार को जोड़ी में कोई पूर्वाक भी नहीं है.

से

सरद की प्राविक्त करून बनाव राजस्व में नहीं है.

सरद की प्रविक्त करून बनाव से दक है. जजी जो वंचित वर्गों के हित में हो राजसत्ता यह भी सुनिश्चति करें कि गरीबों को पर्याप्त अवसर मिल रहे हैं. कल्हाणकारी कामों में भ्रष्टाचार या लीकेज पर हैं करकाणकार्त कमों में आटचार यह लेकिन पर इस पार्टन टिप्पार्थ को 'इस बार पर स्थार नहीं कि चुआईडों आचर के नाज्या से देशों अनेक जुकरों की स्थितिन किया जा स्थारता है, बीट में यह लोगों की भी पहचान हो स्थारी, जी वाडिल लोगों का का मारों है, का चुले हो, अब वाडिल लोगों का का मारों है, का चुले हो, अब वाडिल लोगों में साथ संस्थात अलक्काट उपमाश मुमेलवाईडा। अहाचार और बीट मी लियों तेन करने में सदम होंगे, उज्यास न्यावादा में यह भी कात कि लोगों का का कि का मी स्थारित करने में सदम होंगे, उज्यास न्यावादा में यह भी कात कि का को आबार और साथोंदित पढ़ित से जोड़कर को आधार और बायोमेट्रिक पद्धति से जोड़कर बेहतर बनाने को जरूरत है. क्योंकि जो लोग अनेक बेहता करने को जानता है उच्चीक जो लोग अनेक निकाई एखी हैं, उनका मकसर स्पर है कि वे मर्नालाईंग कर चुरारे और व्येष्ममा को सुर्विता पहुनान या क्लेक्समा जनतर करन के लिए करत है, संसर ने आर्च विकंक के तहत वहा विचया किया है कि एक आदमी के पार एक पिनवाई लोगे से और वह आधार से जुड़े की से चोर्जे निवादित होगी. को निस्स कर खिंग है, व्यक्ति अन्तक इने गोंगों के भाष एक पेनक फिनवाई था, प्लाट के बात कर स्वार्थ है, व्यक्ति अन्तक इने वात हो हो हो के अन्तक इने या प्रतिवादित होगी. प्रतिवादित निवादित को जा सकती है. पर आधार वैजन के इन प्रयोग का विशेष

बहुत एट. तक अच्छा नहिल्ला कर वा गरकार हु।

पर. आधर रोजना के इस प्रवेश कर विनोध कुछ मार्थिकर वार्ति हार्य भी तह है, उन्हें जक है कि आधार के पाध्यर ये पास्तर रहेगा के डिम्में वीतान में एक है कि आधार के पाध्यर ये पास्तर रहेगा के डिम्में वीतान में उच्छा के पास्त्र है, आई डिट्टें के होन कर सकती है, इस रहत होगे हैं, आई डिट्टें के होन कर सकती है, इस रहत होगे हैं, आई डिट्टें के होन कर सकती है, इस रहत होगे हैं, आई डिट्टें के होन कर सकती है, इस रहत हुं अर्थ मंत्र में आधार के अर्थ मार्थ कर के भी गहते कर हुं इस रहत है, होगे हों होगे हैं, इस रहत है अर्थ मार्थ कर हुं इस रहत है, इस रहत है अर्थ होगे हैं, इस रहत है अर्थ होगे हों है, इस रहत है अर्थ होगे हैं, इस रहत है अर्थ हों है अर्थ हो के हैं है अर्थ हो है इस रहत है अर्थ हो हो है इस रहत है अर्थ हो मार्थ हों है इस रहत है है अर्थ हो मार्थ है इस रहत है आर्थ हो हो है है अर्थ हो मार्थ है इस रहत है वा हो है है अर्थ हो मार्थ है इस रहत है वा हो है है

तत्त देवे चाणिय, पर, आधार के प्रयोग को तेकने की बात करों से उर्चित नहीं है, दरअस्ता असरे मुक्क के अदिक के साथ गंधीर समस्या है, वे उदात्ता को सम्बन्धेदता पातते है, पर बात उत्तर समाज और उदार मुख्यों को बचारे एको के रिष्म जो ब्यानस्थार प्रयानन है, बच्चेद एको के रिष्म जो ब्यानस्थार प्रयानन है, बच्चेदता वा स्वअनुशासन को न होना वा विस्मा-कान्त्र को न प्यन्ता उदात्त पर प्रशाह है, आधार के मामणे में कम से कम ऐसा ही ले वहा है, स्विडिंग की कितनी बुनिया के असर देशों में तिती है, जली सम्बन्धे करना समाजिक सुसा के प्रायानन है समाजवादी बेहतर सामाजिक सुरक्षा के प्रावधान हैं. समाजवादी विचारधारा के लोगों के लिए तो आदर्श मुल्क है. विचास्था के लोगे के लिए तो आदर्श मुंक्क है, ज्या सक्का आइंडिटी काई है, त्याच ए फ्रीपेश जहीं है, पर बहुत कम दुकार्ग है, व्याच्छ से पांच या ग्याह से स्वत तक दुकार्ग है, व्याच्छ से पांच या आइंडिटी कोई लेकर रागव ले सकते है, लागम हर जगार आइंडिटी काई की जरूता है, हाल में हर का आइंडिटी काई की जरूता है, हाल में एक मित्र की हमारिक्स की जान की का का का का आईंडी काई तो बात, के अकाउट को खुला, इसी तफ सिंगाए में मिना आईडी काई सांच जा सकता है, यदि आप कार्ट है कि स्पर पहुंद्ध च्या है ते पुलिस एक स्वत्न आईडी कार्ट कार्ट च्या है ते पुलिस एक सुक्त आईडी कार्ट कार्ट कार्ट जा सकता है. यदि आप करते हैं कि स्टप पहुंच्छ वह है। पुलिस पत कर सब कर देखे जायेंगी. इसी तार उन्मेरे एक में समाधिक सुरक्ष तंदर आ कराना अनिकारी है. सस्तात खुती के सभी क्यों में उन्हों रिश्तित है. चीन, कम और अन्य देशों की बात तो छोड़ की दें। बातों वे पहना के करित्र मार्थक अन्य कर के कि समाधिक सम्बाद के सम्माधिक समाधिक के समाधिक समाध

आयेगी. इसलिए अराजकता को रोकने के लिए भ्रष्टाचार को रोकने के लिए ऐसे कानूनी प्रावधानी का होना भारत के हित में है.



